कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्षः 16 अंक : 210 कानपुर, मंगलवार 21 जनवरी 2025 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्यः 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

गेहूं के खेत पर हुआ प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर की ओर से गेहूं की नई उन्नत किस्म डी बी डब्लू 187 (करन बंदना) के गुणवक्ता मूल्यांकन हेतु खलकपुर गांव में प्रगतिशील कृषक देवी प्रसाद के खेत पर लगे प्रदर्शनों पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। लगभग 50 से अधिक कृषकों ने भाग लिया केन्द्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ.शशिकांत ने बताया कि प्रक्षेत्र अनुसंधान नवसृजित कृषि तकनीकी के कृषक प्रक्षेत्र पर स्थानीय कृषि पारिस्थितिकी के अनुसार आवश्यकता सुधार हेतु सूक्ष्म पर हस्तक्षेप करके तकनीकी सुधार एवं प्रसार की एक आवश्यक प्रक्रिया है। डॉ. राजेश राय ने बताया कि प्रक्षेत्र अनुसंधान के अन्तर्गत कृषक प्रक्षेत्र पर लगी हुई गेहूं की उक्त प्रजातियां बदलती जलवायु परिवेश को सहन करने में पूर्णतया सक्षम है तथा पकाव की अवस्था पर तापमान में यकायक वृद्धि को सहन करती है। उन्होंने बताया कि बालियों के सभी दाने एक साइज के पकते है और उपज क्षमता 50-55 क्विंटल होती है। डॉ निमिषा अवस्थी ने बताया कि रोग एवं व्याधियों की पूर्ण रोकथाम हेतु कृषि रसायनों के साथ-साथ बीज उपचार हेतु देशी तकनीक विधियों को खेत की तैयारी, बीज, बुवाई एवं अंकुरण अवस्था पर ध्यान देने से गेहूं की फसल में कीट-बीमारियों को पूर्ण रूप से रोका जा सकता है।

रहस्य संदेश

कानपुर/ शाहजहांपुर/ उन्नाव

गेहूं के खेत पर हुआ प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

अनवर अशरफ

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर की ओर से गेहूं की नई उन्नत किस्म डी बी डब्लू 187 (करन बंदना) के गुणवत्ता मूल्यांकन हेतु खलकपुर गांव में प्रगतिशील कृषक देवी प्रसाद के खेत पर लगे प्रदर्शनों पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। लगभग 50 से अधिक कृषकों ने भाग लिया।

केन्द्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ.शशिकांत ने बताया कि प्रक्षेत्र अनुसंधान नवसृजित कृषि तकनीकी के कृषक प्रक्षेत्र पर स्थानीय कृषि पारिस्थितिकी के अनुसार आवश्यकता सुधार हेतु सूक्ष्म पर हस्तक्षेप करके तकनीकी सुधार एवं प्रसार की एक आवश्यक प्रक्रिया है। डॉ. राजेश राय ने बताया कि प्रक्षेत्र अनुसंधान के अन्तर्गत कृषक प्रक्षेत्र पर लगी हुई गेहूं की उक्त प्रजातियां बदलती जलवायु परिवेश को सहन करने में पूर्णतया सक्षम है तथा पकाव की अवस्था पर तापमान में यकायक वृद्धि को सहन करती है। उन्होंने बताया कि बालियों के सभी दाने एक साइज के पकते है और उपज क्षमता 50-55 क्विंटल होती है। डॉ निमिषा अवस्थी ने बताया कि रोग एवं व्याधियों की पूर्ण रोकथाम हेतु कृषि रसायनों के साथ-साथ बीज उपचार हेतु देशी तकनीक विधियों को खेत की तैयारी, बीज, बुवाई एवं अंकुरण अवस्था पर ध्यान देने से गेहूं की फसल में कीट-बीमारियों को पूर्ण रूप से रोका जा सकता है। चर्चा के दौरान डॉ शशिकांत ने बूंद-बूंद पानी से अधिकतम उत्पादन तकनीक को गेहूं, जौ के साथ-साथ साग -सब्जियों में प्राथमिकता से अपनाने हेतु जोर दिया। उन्होंने बताया कि कृषि प्रक्षेत्र अनुसंधान के तहत गेहूं की नई विकसित प्रजातियों के मूल्यांकन में सिंचाई, मृदा, स्वास्थ्य एवं समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन का विशेष महत्व है तथा समस्याग्रस्त मृदाओं को जिप्सम एवं ढैंचा की हरी खाद लगाकर फसल उत्पादन क्षेत्र को बढ़ाना चाहिए। इस अवसर पर गांव के प्रगतिशील किसान धनीराम,कमलेश,बाबूलाल, पुत्तन लाल,दिनेश,भगवती एवं कृपाल सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

04 प्रदेश, 06 संस्करण

अमर भारती

एक उम्मीद

अंक: 25, पृष्ठ: 12, मूल्य: 03 रु. RNI No. UPHIN/2011/46455 www.amarbharti.com मंगलवार, 21 जनवरी 2025, शक सम्वत् 1946, माघ कृष्ण

मुक्त
वेता

टीम

क अभियान
ध कब्जे की
त कर कब्जा
लिका

लसे नगर को
ल सके और
समुचित चारे
ई जा सके।
धिकारी नगर

गेहूं के खेत पर हुआ प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

कानपुर (अमर भारती ब्यूरो)। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर की ओर से गेहूं की नई उन्नत किस्म डी बी डब्लू 187 (करन बंदना) के गुणवत्ता मूल्यांकन हेतु ख़लकपुर गांव में प्रगतिशील कृषक देवी प्रसाद के खेत पर लगे प्रदर्शनों पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। लगभग 50 से अधिक कृषकों ने भाग लिया केन्द्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ.शशिकांत ने बताया कि प्रक्षेत्र अनुसंधान नवसृजित कृषि तकनीकी के कृषक प्रक्षेत्र पर स्थानीय कृषि पारिस्थितिकी के अनुसार आवश्यकता सुधार हेतु सूक्ष्म पर हस्तक्षेप करके तकनीकी सुधार एवं प्रसार की एक आवश्यक प्रक्रिया है। डॉ. राजेश राय ने बताया कि प्रक्षेत्र अनुसंधान के अन्तर्गत कृषक प्रक्षेत्र पर लगी हुई गेहूं की उक्त प्रजातियां बदलती जलवायु परिवेश को सहन करने में पूर्णतया सक्षम है तथा पकाव की अवस्था पर तापमान में यकायक वृद्धि को सहन करती है।

सामूहि
बेटियो

अमर

हरदोई। अ
परिसर में जिल
आयोजित मुख
कार्यक्रम का उ
शिक्षा रजनी ति
मंगला प्रसाद सि
प्रज्जवलित कर
जोड़ों पर पुष्प व
तथा उपहार दे
अवसर पर सामू
सम्बोधित करते
कि मुख्यमंत्री स
मा0 मुख्यमंत्री
है। उन्होंने कहा
विवाह योजना प्र
परिवारों के लिए
जो बेटियों की
मदद देती है।

उन्होने कहा
बढ़ावा देने के
योजनाएं चलाव

सत्य का असर समाचार पत्र

21,01,2025jksingh,hardoi gmail com मोबाइल नंबर 9956834016

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

गेहूं के खेत पर हुआ प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

गेहूं की नई उन्नत किस्म डी बी डब्लू 187 (करन बंदना) के गुणवत्ता मूल्यांकन हेतु प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

News Banner Maker

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल सत्य का असर समाचार पत्र कानपुर चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर की ओर से गेहूं की नई उन्नत किस्म डी बी डब्लू 187 (करन बंदना) के गुणवत्ता मूल्यांकन हेतु ख़लकपुर गांव में प्रगतिशील कृषक देवी प्रसाद के खेत पर लगे प्रदर्शनों पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। लगभग 50 से अधिक कृषकों ने भाग लिया। केन्द्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ.शशिकांत ने बताया कि प्रक्षेत्र अनुसंधान नवसृजित कृषि तकनीकी के कृषक प्रक्षेत्र पर स्थानीय कृषि पारिस्थितिकी के अनुसार आवश्यकता सुधार हेतु सूक्ष्म पर हस्तक्षेप करके तकनीकी सुधार एवं प्रसार की एक आवश्यक प्रक्रिया है। डॉ. राजेश राय ने बताया कि प्रक्षेत्र अनुसंधान के अन्तर्गत कृषक प्रक्षेत्र पर लगी हुई गेहूं की उक्त प्रजातियां बदलती जलवायु परिवेश को सहन करने में पूर्णतया सक्षम है तथा पकाव की अवस्था पर तापमान में यकायक वृद्धि को सहन करती है। उन्होंने बताया कि बालियों के सभी दाने एक साइज के पकते है और उपज क्षमता 50-55 क्विंटल होती है। डॉ निमिषा अवस्थी ने बताया कि रोग एवं व्याधियों की पूर्ण रोकथाम हेतु कृषि रसायनों के साथ-साथ बीज उपचार हेतु देशी तकनीक विधियों को खेत की तैयारी, बीज, बुवाई एवं अंकुरण अवस्था पर ध्यान देने से गेहूं की फसल में कीट-बीमारियों को पूर्ण रूप से रोका जा सकता है। चर्चा के दौरान डॉ शशिकांत ने बूंद-बूंद पानी से अधिकतम उत्पादन तकनीक को गेहूं, जौ के साथ-साथ साग -सब्जियों में प्राथमिकता से अपनाने हेतु जोर दिया। उन्होंने बताया कि कृषि प्रक्षेत्र अनुसंधान के तहत गेहूं की नई विकसित प्रजातियों के मूल्यांकन में सिंचाई, मृदा, स्वास्थ्य एवं समन्वित पोषक तत्व प्रबंधन का विशेष महत्व है तथा समस्याग्रस्त मृदाओं को जिप्सम एवं ढैंचा की हरी खाद लगाकर फसल उत्पादन क्षेत्र को बढ़ाना चाहिए। इस अवसर पर गांव के प्रगतिशील किसान धनीराम,कमलेश,बाबूलाल, पुत्तन लाल,दिनेश,भगवती एवं कृपाल सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।